विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वादश: पाठनाम पुनर्मूषिको भव

पाठ्यांश:

गौतमस्य महर्षे: तपोवने महातपा नाम मुनि: आसीत् ।

स: मुनि: एकदा मूषकशावकं अपश्यत् ।तत: स्वभाव: दयात्मा

मुनि: तम् शावकं अरक्षत् । अन्नकणै: समवर्धत च । एकदा

एक: विडाल: तं मूषकं खादितुम् अधावत् ।

शब्दार्था:

नीयमानं - ले जाए जाते हुए को , काके – कौआ के द्वारा

मूषकशावकं – चूहे के बच्चा को , अरक्षत् – रक्षाकिया ,

अधावत् – दौड़ा , अन्नकणै: - अन्न के दानों से , समवर्धत – पालन

पोषण किया , एकदा – एकबार , विडाल: - बिलाड , खादितुम् –

खाने के लिए

अर्थ

गौतम महर्षि के आश्रम में महातपा नामक मुनि थे। वह मुनि एकबार

कौआ के द्वारा ले जाते हुए चूहे के बच्चे को देखा ।दयात्मा स्वभाव वाले

मुनि उस बच्चे की रक्षा किया ।अनाज दानों से पालन पोषण किया।एक

बार एक बिलाड उसे खाने के लिए दौड़ा।